गया कालेज में उर्दू फिक्शन में आदिवासी सभ्यता एवं संस्कृति पर संगोष्ठी● जागरण

गया कालेज में उर्दू फिक्शन में आदिवासी सभ्यता एवं संस्कृति पर संगोष्ठी

जागरण संवाददाता, गयाजी : साहित्य अकादमी नई दिल्ली के सहयोग से गया कालेज के उर्दू विभाग में उर्दू फिक्शन में आदिवासी सभ्यता एवं संस्कृति विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कालेज के प्राचार्य प्रो. सतीश सिंह चंद्र ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि उर्दू भाषा की मिठास मन को मोह लेती है और इस संगोष्ठी का विषय समय की मांग है। मुख्य अतिथि, प्रसिद्ध शायर एवं साहित्य अकादमी के उर्दू सलाहकार बोर्ड के संयोजक चंद्रभान खयाल ने कहा कि साहित्य का उद्देश्य दबे-कुचले लोगों की पीड़ा को सामने लाना है और आदिवासी समुदाय की समस्याओं को साहित्य में अभिव्यक्त करना नैतिक जिम्मेदारी है। तकनीकी सत्र की अध्यक्षता पूर्व आईजी एवं साहित्यकार मासूम अजीज काजमी ने की, जिन्होंने अख्तर औरैनीवी के उपन्यास हसरत-ए-तामीर में आदिवासी संस्कृति के सुंदर चित्रण पर चर्चा की। भूगोल विभागाध्यक्ष प्रो. विभा सिंह ने आदिवासी समाज की समस्याओं और साहित्य में उनकी भूमिका पर सारगर्भित विचार रखे। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में स्वागत भाषण देते हुए फिक्शन लेखक व साहित्य अकादमी सदस्य डा. अहमद सगीर ने कहा कि संभवतः उर्दू में इस विषय पर पहली बार इस स्तर पर संगोष्ठी हो रही है। उन्होंने साहित्य अकादमी का आभार व्यक्त किया। डा. नुज़हत परवीन, डा. अब्दुल हई, डा. सैयद अशहद करीम, डा. ज़ियाउल्लाह, डा. मो. गालिब नश्तर और डा. मो. मिन्हाजुद्दीन ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। कार्यक्रम की शुरुआत एमए तृतीय सेमेस्टर की छात्राओं द्वारा कुलगीत, स्वागत गीत और इकबाल की कविता से हुई। अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ व शॉल से किया गया और दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम आरंभ हुआ। संचालन डा. मो.मिन्हाजुद्दीन ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन उर्दू विभागाध्यक्ष डा. अब्दुल हई ने प्रस्तुत किया। बड़ी संख्या में प्राध्यापक व छात्र-छात्राओं की उपस्थिति के साथ कार्यक्रम का समापन जन गण मन से हुआ।